तिथि
7.4.2020

सूरदास के भ्रमर गीत की विशेषता (टिप्पणी)

①

स्नातक प्रथम खंड
(हिन्दी प्रतिष्ठा)
पत्र - द्वितीय - II

भ्रमर को माध्यम बनाकर कृष्ण को लिखे गए गीतों से संबंधित काव्य भ्रमरगीत कहलाता है। वस्तुत: यह उपालंभ काव्य है।

सूरदास ने अपने ~~सूर~~ 'सूरसागर' में जिस 'भ्रमरगीत' की सृष्टि की है उसका वर्णन श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध के 46वें एंव 47वें अध्याय में किया गया है, जो केवल 118 श्लोकों में लिखित है। सूर ने अपने 'सूरसागर' नामक बृहत् ग्रंथ में उसका विस्तृत और भावमय वर्णन किया है। उनका भ्रमरगीत 749 पदों में रचित है। भागवत का भ्रमरगीत वर्णनात्मक है, जब कि सूर का भ्रमरगीत गीतात्मक है। सूर का भ्रमरगीत श्रीमद्भागवत का ऋणी है।

सूर का भ्रमरगीत यद्यपि श्रीमद्भागवत का ऋणी है फिर भी उन्होंने इसमें अपनी नवीन और मौलिक उद्भावनाएँ प्रस्तुत की है। सूर ने अपने इस प्रसंग में प्रमुखत: निर्गुण पर सगुण की विजय, ज्ञान पर भक्ति का जयघोष किया है। इसमें विरह की समस्त दशाओं का वर्णन उपलब्ध होता है।

इसमें शब्द की वक्रता है, व्यंग्य है — अर्थ की ही नहीं बल्कि 'भ्रमरगीत' में काकुवक्रोक्ति के मनोरम उदाहरण भरे पड़े हैं - गोपियाँ उद्धव को उपालंभ देती हुई कहती हैं कि उन्होंने इतने संदेश भेजे, किन्तु एक का भी उत्तर नहीं आया। और तो और संदेशवाहक भी लौटकर नहीं आये —

" संदेसनि मधुबन कूप भरे।
जो कोउ पथिक गए हैं ह्यां तें फिर नहीं गवन करे।
कारण ? . . .
कै वै श्याम सिखाय समोधे कै वै बीच मरे।"

वे जिसको देखती हैं, उसी को संदेश-वाहक बना लेती हैं।

— डॉ० आरती प्रसाद
सहप्राचार्य
हिन्दी- विभाग
राम नरायण महाविद्यालय
पंडौल, मधुबनी

तिथि
7.4.2020

स्नातक प्रथम खंड
हिन्दी (प्रतिष्ठा)
पत्र - द्वितीय - II

सूरदास के गीति-तत्व

टिप्पणी

सामवेद के गीतों मे गीत-रचना का आरंभ होता है। जयदेव, विद्यापति, अमीर खुसरो से होते हुए गीति-काव्य का पूर्ण विकास भक्तिकाल में होता है। यह क्रम निर्गुणमार्गी संत कवि कबीर से आरंभ होता है। गीत काव्य का चरम विकास हमें भक्तिकाल में कृष्णभक्त कवियों (सूर आदि अष्टछाप कवि, मीराबाई तथा अन्य कृष्णभक्त कवियों) की रचनाओं में प्राप्त होता है। इनमें सूरदास का नाम सर्वोपरि है।

गीति की सृष्टि आत्माभिव्यक्ति के दृष्टिकोण से होती है। आत्माभिव्यंजना, विचारों की एक-रूपता, संगीत का समावेश गीति के प्रमुख तत्व हैं। अपने आराध्य से आत्म निवेदन के आल्हाद में रचना गेय बन जाती है।

सूरदास कवि और गायक दोनों थे। अतः उनकी समग्र काव्य-रचना में कविता और संगीत का प्राकृतिक-संतुलन प्राप्त होता है। सूर के भीतर भावुकता और तन्मयता गहरे रूप में समाई हुई है। नंद-यशोदा, राधा, गोप-गोपियों के माध्यम से उन्होंने अपनी इन वृत्तियों को ही काव्य-रूप में प्रकट किया है

सूर का 'सूरसागर' उनके भावों एवं गहन अनुभूतियों का अतल सागर है, जिसमें उन्होंने गीतों के माध्यम से भक्ति, वात्सल्य एवं शृंगार की अद्भुत त्रिवेणी बहाई है।

सूरदास ने पद-शैली पर गीतों की रचना की है। सूर की आत्मा की पुकार ही उनके गीतों से साकार हुई है। कवि की पुष्टिमार्गीय तरल अभिव्यक्ति स्वतः गीतकार हो गई है। श्रीमद्भागवतकार की भाँति सूर ने श्रीकृष्ण लीला में सम्मिलित होकर पुष्टिमार्गीय आनंद लाभ की शुद्ध और मनोरम अभिव्यक्ति की है। सूरदास के पदों में उनकी आत्मा का रस वाणी रूप में प्रवाहित होता हुआ दिखाई देता है।

आ० रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में, "चलती हुई ब्रज भाषा में सबसे पहली साहित्यिक रचना होने पर भी ये पद इतने सुडौल और परिमार्जित हैं। इनकी गीत-रचना इतनी प्रगल्भ और काव्यांगपूर्ण है कि आगे होने वाले कवियों की उक्तियाँ उनकी जूठी जान पड़ती हैं।

- डॉ० आरती प्रसाद
सह प्राचार्य
हिन्दी-विभाग
रामनारायण महाविद्यालय
पंडौल, मधुबनी